एमजीएमजी कार्यक्रम के अंतर्गत संतुलित उर्वरक उपयोग पर किसान गोष्ठी आयोजित

एमजीएमजी कार्यक्रम के अंतर्गत संतुलित उर्वरक उपयोग एवं टिकाऊ कृषि पद्धतियों पर केंद्रित एक किसान गोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के गाज़ियाबाद एवं मेरठ जनपदों से बड़ी संख्या में किसानों ने सक्रिय सहभागिता की। कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ. अनुपमा सिंह, डीन, आईएआरआई ने किया। उनके साथ आईएआरआई के वैज्ञानिक डॉ. आर. के. यादव, डॉ. सुरेश नेबापुरे तथा डॉ. सुभाश्री साहू उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिक पोषक तत्व प्रबंधन को बढ़ावा देना तथा समेकित एवं लाभकारी कृषि प्रणालियों के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। तकनीकी सत्र के दौरान विशेषज्ञों ने उर्वरकों के संतुलित उपयोग के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। मृदा परीक्षण के आधार पर नाइट्रोजन (N), फॉस्फोरस (P), पोटाश (K) के साथ-साथ द्वितीयक एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों के विवेकपूर्ण उपयोग पर विशेष जोर दिया गया। किसानों को आवश्यकता-आधारित उर्वरक प्रयोग के माध्यम से मृदा स्वास्थ्य बनाए रखने, लागत घटाने और उत्पादकता बढ़ाने के प्रति जागरूक किया गया। मौके पर पोषक तत्वों के विश्लेषण एवं फसल-विशिष्ट उर्वरक सिफारिश प्रदान करने में पूसा एसटीएफआर (सॉइल टेस्ट फर्टिलाइज़र रिकमेंडेशन) मीटर की भूमिका को भी रेखांकित किया गया।

आय वृद्धि एवं जोखिम न्यूनीकरण के प्रभावी उपाय के रूप में विविधीकृत कृषि प्रणाली पर भी चर्चा की गई। संसाधन व्यक्तियों ने फसल, पशुपालन, बागवानी तथा सहायक उद्यमों के एकीकरण को सतत आजीविका के लिए आवश्यक बताया। कृषि उद्यमिता और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करने हेतु ग्रामीण युवाओं, महिलाओं एवं किसानों के क्षमता निर्माण और कौशल विकास पर विशेष बल दिया गया। किसानों, कृषि-स्टार्टअप्स तथा किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के समर्थन हेतु भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी भी साझा की गई। किसानों को सामूहिक विपणन, मूल्य संवर्धन एवं इनपुट क्रय को सुदृढ़ करने के लिए इन योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया गया।

अद्यतन कृषि तकनीकों एवं परामर्श का विश्वसनीय स्रोत के रूप में “पूसा समाचार” के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया तथा किसानों को वैज्ञानिक जानकारी का नियमित उपयोग कर सूचित निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया गया। संवादात्मक सत्र के दौरान किसानों ने पोषक तत्व प्रबंधन, मृदा परीक्षण प्रक्रियाओं, फसल विविधीकरण एवं जैविक अवशेष प्रबंधन से संबंधित अनेक प्रश्न पूछे, जो उनकी सक्रिय भागीदारी एवं रुचि को दर्शाता है। विशेषज्ञों ने उनके प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर मूंग पी-1641, धान पीबी-1847, पीबी-1885, पीबी-1886, पीबी-1985, पीबी-1979, भिंडी पीबी-5 के गुणवत्तापूर्ण बीज, सब्जी बीज किट तथा पूसा डीकम्पोजर फॉर्मुलेशन किसानों के बीच वितरित

किए गए, ताकि टिकाऊ अवशेष प्रबंधन एवं समय पर बुवाई की पद्धतियों को प्रोत्साहित किया जा सके। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें किसान-वैज्ञानिक संवाद को सुदृढ़ करने तथा मृदा स्वास्थ्य सुधार एवं कृषि लाभप्रदता बढ़ाने हेतु संतुलित उर्वरक उपयोग को प्रोत्साहित करने की प्रतिबद्धता दोहराई गई।

किसान गोष्ठी की झलकियाँ

News Report

Kisan Goshthi on Balanced Fertiliser Use Organised under MGMG Programme

A Kisan Goshthi focusing on balanced fertiliser application and sustainable agricultural practices was successfully organised under the MGMG programme, drawing active participation from a large number of farmers from Ghaziabad and Meerut districts of Uttar Pradesh. The team was led by Dr. Anupama Singh, Dean, IARI accompanied by other scientists of IARI- Drs. R K Yadav, Suresh Nebapure and Subhashree Sahu.

The programme aimed to promote scientific nutrient management and enhance awareness about integrated and profitable farming systems. During the technical session, experts elaborated on the importance of balanced use of fertilisers, emphasising judicious application of nitrogen (N), phosphorus (P), potassium (K) along with secondary and micronutrients based on soil testing. Farmers were sensitised about maintaining soil health, reducing input costs, and improving productivity through need-based fertiliser application. The role of the Pusa STFR (Soil Test Fertilizer Recommendation) Meter in providing on-the-spot nutrient analysis and crop-specific fertiliser recommendations was also highlighted.

Discussions were also held on diversified farming systems as a pathway towards income enhancement and risk minimisation. Resource persons stressed the integration of crops, livestock, horticulture and allied enterprises for sustainable livelihoods. Special emphasis was given to capacity building and skilling of rural youth, women, and farmers to promote agri-entrepreneurship and self-reliance. Information regarding various Government of India schemes supporting farmers, agri-startups, and Farmer Producer Organisations (FPOs) was shared in detail. Farmers were encouraged to leverage these schemes for strengthening collective marketing, value addition, and input procurement.

The significance of Pusa Samachar as a credible source of updated agricultural technologies and advisories was also discussed. Farmers were motivated to regularly access scientific information for informed decision-making. During the interactive session, farmers raised numerous queries related to nutrient management, soil testing procedures, crop diversification, and organic residue management, reflecting keen interest and active engagement. Experts addressed their concerns with practical and location-specific solutions.

On the occasion, quality seeds of Moong P-1641, paddy PB- 1847, PB- 1885, PB- 1886, PB-1985, PB- 1979, Bhindi PB-5, vegetable seed kits and Pusa Decomposer formulation were distributed among participating farmers to promote sustainable residue management and timely sowing practices. The programme concluded with a vote of thanks, reiterating the commitment to strengthening farmer-scientist interface and promoting balanced fertilisation for improved soil health and enhanced farm profitability.

मेरा गाँव मेरा गौरव
उर्वरक उपयोग अभियान

Glimpses of the *Kisan Gosthi*